परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद
डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
प्रधान संपादक
सिंघई राजेन्द्र जैन, 9407453066
सह संपादिका
श्रीमती अर्चना अजय जैन, 9827796013
श्रीमती अनुपमा रजनीश जैन, 9009066884
कोषाध्यक्ष -
सुधेश कुमार जैन, 9827254111
प्रबंध संपादक
राजेन्द्र कुमार जैन, सायकलवाले, 9425353972
खुशालचन्द जैन, 9302123879
कोमलंचद जैन, 9329524227
(संयोजक एवं प्रकाशक)
बाहुबली जैन, 9827247847
*** विशेष सहयोगी ***
श्री प्रदीपकुमार कमलाप्रसाद जैन, मणी नगर
श्री मुन्नालाल मुकेशकुमार जैन, पिपरा
*** सहयोगी सदस्य ***
श्री अजीतकुमार रतनचंद जैन, विदिशा
श्री अनिलकुमार प्रेमचंद जैन, अहमदाबाद

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855
IFSC Code: SBIN0030134
में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट - 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	300/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड़, इन्दौर पर भेंजे।

अपने ज्ञान का उपयोग समाज के कल्याण के लिए करें -

प्रदीपकुमार जैन, भोपाल । अपने ज्ञान का उपयोग आत्म कल्याण में करो । जीवन का विकास करना है तो गुणग्राही बनो । जीव जितने भी पाप करता है, तन से नहीं मन से करता है, क्योंकि मन की गति तन की गति से कहीं ज्यादा अधिक है । मन की मनमानी पर अंकुश और चंचल चित्त पर जिस दिन रोक लगाना सीख लोगे, तो जगत में भटकना समाप्त हो जायेगा । स्वयं कल्याण के साथ समाज कल्याण की भावना हमारे अंदर होना चाहिये ताकि समाज का हर वर्ग उन्नत हो सके । यह सद्विचार आचार्य श्री 108 विशुद्धसागरजी महाराज ने नेहरु नगर, भोपाल में चल रहे श्री 1008 मज्जिनेन्द्र रत्नमयी चौबीसी जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की धर्मसभा में व्यक्त किये । पंचकल्याण में आयोजित प्रवचन श्रृंखला में आचार्य श्री ने कहा गिरगिट को बदनाम मत करो, वह तो एक दो बार ही रंग बदलता है लेकिन आप स्वयं अपने भावों से मिलोगे तो यह देखोगे कि हम कितनी बार भावों का रंग बदलते है । मंदिर में रहकर भी जीव मंदिर में नहीं मिलेगा । मात्र कुछ समय ही अपने स्वयं के अंदर प्रवेश कर जाओ तो मोक्ष मिल जायेगा। उन्होंने कहा कि भरे हुए को दुनिया भरती है, खाली को कोई नहीं । इसी तरह उठे हुए को ही दुनिया उठाती है लेकिन गिरे हुए को कोई नहीं उठाता । भरे हुए कलश में ही लोग नेग दस्तूर करते है। साधना के क्षेत्र में प्रशंसा अवरोधक का काम करती है इसीलिये हे जीव न प्रशंसा मे फूलना, न निंदा में कूलना, दोनों क्षणिक है । ज्ञानी जीव सदा मध्यस्थ रहता है । स्वयं के भावों को संभाल लोंगे तो भगवान बन जाओगे ।

नेहरु नगर में स्थित वर्तमान जिनालय का निर्माण अनेक बाधाओं को पार कर किया गया है । पहले देव दर्शन की अस्थाई व्यवस्था प्लॉट नंबर बी.एम. 187 में हुआ करती थी। उस समय लगभग 20-25 परिवार मंदिरजी से जुड़े हुए थे। कुछ ही दिनों के पश्चात् वर्तमान प्रांगण में समाज के लोगों ने मिलकर टेंट लगाकर श्रीजी की स्थापना कर दी । चूँकि मामला सामाजिक होनें से आसपास रहवासियों द्वारा भारी विरोध किया गया, अनेको बार तोड़-फोड़ होने के कारण सभी परिवारों ने सुरक्षा की दृष्टि से बारी-बारी से ड्यूटी देते थे। कुछ समय पश्चात 10×10 की जगह में टीन की चारदीवारी बनाई व देव दर्शन व्यवस्था को सुगम बनाया । इस तरह की सभी व्यवस्था बनाने में तथा 'वीतराग दर्शनालय समिति' बनाकर उपनियम तैयार कर संस्था को रजिस्टर्ड कराने में स्वर्गीय श्री एम.एल.जैन (सेवानिवृत्त पासपोर्ट अधिकारी) की मुख्य भूमिका रही। समय निकलता रहा समाज के लोगो ने मिलकर लोहे के पिलर एवं शीट का एक बड़ा शेड बनाकर तैयार करवाया । इस तरह रातों-रात बिना मजदूरों के समाज के पुरुषों, महिलाओं व बच्चों आदि ने मिलकर शेड को खड़ा कर एक हाल का रूप दे दिया। शनैः-शनैः नए परिवारों की संख्या बढ़ती चली गई, परिसर भी नया रूप लेने लगा। कालांतर में एक जीवट पूज्य मुनिश्री 108 विमदसागरजी महाराज का नेहरू नगर मंदिरजी में आगमन हुआ जिससे समाज में अत्यन्त धर्म प्रभावना हुई और शिखरबद्ध मंदिरजी के निर्माण की भावना प्रबल हुई। हम सभी के पुण्य उदय से कुछ समय पश्चात् पूज्य मुनिश्री 108 विशुद्धसागरजी महाराज का मंगल आगमन हुआ । उनके पावन सान्निध्य में 21 अक्टूबर, 2002, शरद पूर्णिमा के दिन तीन खण्ड के शिखरबद्ध मंदिरजी का शिलान्यास हुआ। दिसम्बर, 2002 में संत शिरोमणि आचार्य108 श्री विद्यासागरजी महाराज संसघ नेहरू नगर पधारे एवं तीन दिनों तक समाज ने भक्तिपूर्वक पूजा-अर्चना की एवं आहारचर्या कराकर पुण्यार्जन किया। आचार्य श्री ने परिसर को तीर्थ की उपमा दी । वर्ष 2012 महावीर जयंती के पुनीत अवसर पर श्री वर्धमान महावीर औषधालय का शुभारंभ हुआ जो कि निश्चित ही सामाजिक हित की उत्कृष्ट भावना प्रकट करता हैं। निरंतर बढ़ते परिवार एवं धर्मावलंबियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, प्रथम तल के विस्तार की योजना बनाई जिसमें निर्माण कमेटी संयोजक इंजीनियर श्री महेन्द्र जैन (लघु उद्योग निगम) की टीम ने सहयोग कर कार्य सम्पन्न कराया । सानंद संपन्न हुए पंचकल्याणक महोत्सव में भोजनशाला के प्रमुख संयोजक श्री प्रदीपकुमार जैन एलआयसी रहे । आपने दो बार महामंत्री के रुप में अपना दायित्व निभाया है । आपके साथ भोपाल गोलालारीय समाज अध्यक्ष प्रदीपकुमार जैन नौहरकलांवालों ने 1 लाख की राशि इस प्रयोजन हेतु दान की व श्री एन.के. जैन कोटरा का विशेष योगदान रहा ।

श्री सिद्धचक्र 64 महामंडल विधान सानंद संपन्न ।

शांतिकुमार जैन, गंजबासौदा । श्री सिद्धचक्र 64 महामंडल विधान का विशाल आयोजन तारण तरण पाठशाला में मुनि श्री 108 कुन्थुनाथ सागरजी महाराज एवं श्री क्षुल्लक 105 हर्षित सागरजी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ । प्रतिदिन अभिषेक, शांतिधारा व नित्य नियम पूजन के बाद सिद्धचक्र महामंडल विधान प्रारंभ होकर तत्पश्चात मुनिश्री के प्रवचनों का लाभ मिलता था । 25 दिसम्बर को मुनि संघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह मनाया गया । इस विशाल धार्मिक आयोजन के समापन पर धूसरपुरा स्थित पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर से विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें गजरथ के साथ 64 विमानों में श्री जी को विराजमान कर नगर परिक्रमा कराई गई ।

इस शोभा यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के साथ मुनि संघ का चल समारोह भी निकला। नगर परिक्रमा में गजरथ पर श्रीजी को विराजमान कर मुख्य पात्र इन्द्र-इन्द्राणियों की वेशभूषा में सपरिवार सवार थे, उनके पीछे 64 विमानों को केसरिया वेशभूषा से सजे इन्द्र कंधे पर लेकर पैदल विहार करते हुए चल रहे थे। रथों में सौधर्म इन्द्र, ईशान इन्द्र, सनतकुमार इन्द्र, माहेन्द्र इन्द्र एवं उपेन्द्र सपरिवार श्रीजी को साथ लेकर सवार थे।

इस विशाल आयोजन में नगर व आस पास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में जैन धर्मालु आयोजन में शामिल हुए। सभी कार्यक्रम आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से मुनि श्री 108 कुन्थुसागरजी महाराज क्षुल्लक 105 हर्षितसागरजी महाराज के मार्ग दर्शन और बा.ब्र. धीरज भैया राहतगढ़ व राजेश भैया टडा के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान दिल्ली से पधारे प्रसिद्ध कलाकार मनोज शर्मा ग्रुप द्वारा ज्ञानवर्द्धक नाटिकाओं का सफल मंचन किया गया। ऐसा अनूठा कार्यक्रम गंजबासौदा के इतिहास में प्रथम बार सम्पन्न हुआ हैं ।

गोलालारीय दर्शन के शिरोमणी संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी व सदस्यों के नाम आगामी अंको में सुविधानुसार प्रकाशित किए जावेगें। इस संदर्भ में आपसे सादर अनुरोध हैं कि आपने गोलालारीय दर्शन पत्रिका में सदस्यता हेतु राशि जमा कराई हैं तो उसका विवरण पेपर के स्टीकर पर अंकित रहता हैं यदि इस स्टीकर में किसी प्रकार की त्रुटि हैं तो आप 9424013136 पर चर्चा कर सुधार करा सकते हैं। चर्चा के समय स्टीकर पर अंकित सदस्यता क्रमांक अवश्य बताएं।